International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 6; November 2017; Page No. 15-18

बंजारा लोक-संस्कृति : एक अवलोकन

इक़बाल
शोधार्थी, पी.एच.डी. हिंदी, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा, भारत

प्रस्तावना

लोक संस्कृति को लोग साधारणतया 'ग्रामीण संस्कृति' का पर्याय मान लेते हैं, जबकि यह उन सभी लोगों की संस्कृति है जो किसी समुदाय का हिस्सा है, जिनकी कुछ परंपराएँ तथा मान्यताएँ हैं। लोक संस्कृति में बराबर समय के साथ बदलाव आते है। जिस तरह लोकगीतों में कभी ठहराव नहीं आता, वह जिसके कंठ से फूटते है उसी के हो जाते है, ठीक उसी तरह लोक संस्कृति में बराबर कुछ-न-कुछ जुड़ता और घटता रहता है। पर इस सारे जोड़ घटाव के बाद भी उसकी मूल सुगंधि ज्यों कि ज्यों बनी रहती है।

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार "लोक शब्द का अर्थ जनपद या ग्राम्य नहीं है, बल्कि नगरों और गाँवों में फैली हुई वह समूची जनता है, जिसके व्यावहारिक ज्ञान का आधार पोथियाँ नहीं है।"[1]

विद्यानिवास मिश्र लोक को इस अर्थ में (अशिक्षित, अर्ध शिक्षित के अर्थ में) लेने का विरोध करते है 'लोक' का व्युत्पत्तिपरक अर्थ है "जो कुछ दिखता है, इन्द्रिय गोचर है, प्रत्यक्ष है, सामने है, इसी से उसमें एक तरह की समकालीनता और प्रत्यक्ष विषयता का बोध होता है। फोक की अवधारण जैसे पश्चिम में बन गई है। वह बहुत कुछ इस प्रकार की है कि जो पीछे छूट गया है, जो गवारु है, जो अनपढ़ लोगों की वाचिक परंपरा के रुप में स्वीकृत है, वह फोक है, लेकिन लोक मनुष्य समुदाय तक सीमित नहीं करता है, वह बहुत व्यापक है। समस्त जीवन जो सामने फैला हुआ है,या संचरणशीलया सथावर है वह सब लोक है।"[2]

लोक संस्कृति के अंतर्गत लोक संस्कार, लोक-विश्वास, मिथक, लोक साहित्य, लोक चेतना और लोक संगीत सभी कुछ समाहित है, लोक की बात निकलते ही लोक गीतों और संस्कृति की रंगारंग छवियाँ साकार हो उठती है। वैसे भी हमारे देश में इतनी सारी लोक संस्कृतियाँ है। इनमें से एक लोक संस्कृति 'बंजारा संस्कृति' है। 'बंजारा' वह व्यक्ति है, जो जीवन-पर्यंत एक स्थान से दूसरे स्थान पर घुमता रहता है। बंजारों का न कोई ठौर-ठिकाना होता है, ना ही घर-द्वार। पूरी जिंदगी यह समुदाय यायावरी में निकाल देता है। किसी स्थान विशेष से भी इनका कोई लगाव लहीं होता है। एक स्थान पर यह ठहरते नहीं। सदियों से यह समाज देश के दूर-दराज इलाकों में निडर होकर यात्राएँ करता रहता है।

बंजारा समाज का मूल लगभग सभी इतिहासकारों ने राजस्थान को ही माना है। बंजारा समाज यह भारत के प्रत्येक प्रांत में अनेक नामों से जाना जाता है। जैसे महाराष्ट्र में बंजारा, कर्नाटक में लमाणी, आंध्र में लंबाडा, पंजाब में बाजीगर, उत्तर प्रदेश में नायक समाज और बाहरी दुनिया में राणी नाम से जाने जाते है। बंजारा शब्द की व्युत्पत्ति के संबंध में विद्वानों के अनेक विचार है। भारत की सबसे सभ्य और प्राचीन संस्कृति सिंधु संस्कृति को माना जाता है। इसी संस्कृति से जुड़ी हुई गोर-बंजारा संस्कृति है ।इस समाज का अलग-अलग भागों में विभिन्न नामों से जाना जाता है। किंतु बंजारा समाज के मनुष्य को हर प्रांत में 'गोर' तथा 'गोरमाटी' नाम से जाना जाता है।

बंजारा वह व्यक्ति है, जो बैलों पर अनाज लादकर बेचने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान को जाता है। उसी व्यक्ति को 'बंजारा' कहा जाता है। अनादि काल से यह समाज व्यापार करता था। तब से इस जाति को 'वाणिज्यकार' के नाम से संबोधित किया जाता है। 'वाणिज्य' यह शब्द संस्कृत का है। वाणिज्य शब्द को ही हिंदी में 'बणज' कहा जाता है तथा 'बनज' से ही बनजारा शब्द की व्युत्पत्ति हुई है। 'बणजारा' को 'गोर' भी कहा जाता है। 'बणजारा' शब्द मुक्त जीवन जीने के प्रतीक रूप में प्रयुक्त किया जाता है।–

"ईक बणजारा गाये, जीवन के गीत सुनाये,
हम सब जीने वालों को जीने की राह सिखाये"[3]

बंजारा शब्द की व्युत्पत्ति के संदर्भ में डॉ.ग्रियर्सन ने- संस्कृत के वाणिज्य के साथ बनजारा शब्द का संबंध स्थापित किया जाता है- "वाणिज्य-वाणिज्यकार-वाणिज्जारों-बनजारा इस तरह कहा जाता है कि बनजारा शब्द सूचक नहीं, व्यवसाय सूचक है।"[4]

बंजारा शब्द के संदर्भ में समाजशास्त्री रसेल तथा हीरालाल का मत है कि-"राजस्थान के मूल निवासी 'गोर' या चारण लोग मध्यकालीन भारत में बंजारा नाम से प्रख्यात हुए।"[5]

साथ ही बंजारा लोक गीतों का विशलेषण करने पर पता चलता है कि बंजारा संस्कृति की परंपरा अत्यंत प्राचीन रही है। इसका उद्भव हमें हडप्पा संस्कृति तथा सिंधु संस्कृति से हुआ है। बंजारा बोली में 'हडप्पा नगरी' को 'हरपळी नगरी' नाम से संबोधित किया गया जाता है। इस संदर्भ में हमें यह लोकगीत मिलता है-

"नगरी वसतीन साई वेस,
आन-धन देस,
मारे नायक बापुरी नगरी हवेली'
खाये पियेसी नगरी"[6]

उपरोक्त लोकगीत मे 'नगरी' यह शब्द महत्वपूर्ण है। 'नगरी' का अर्थ है- 'हडप्पा नगर'। बंजारा समाज कोई भी शुभ कार्य करने से पहले भगवान से प्रार्थना की जाती है-

"ये पणि जे पणि
गंगा पणि सरसती
निरंकार तू हर जे बोलो"[7]

उपर्युक्त प्रार्थना के अनुसार बंजारा समाज का रचना काल गंगा सरस्वती के पहाड़ी प्रदेश में विकसित रहने वाली हडप्पा संस्कृति के कालखंडों में रहकर सरस्वती का परिसर ही बंजारा संस्कृति का मूल बस्ती स्थान है। बंजारा समाज में नारियों को भी

'हरपळी' कहा जाता है। 'हरपळी' का बंजारा बोली में अर्थ- हडप्पा की रहनेवाली। इस संदर्भ में यह गीत दिखाई देता है।–

"मारी हरपळी याडी
मारी हरपळी बाई
मार हरपळ नायकन"[8]

बंजारा संस्कृति में ज्यादातर लोग गाय-बैलों का ही व्यापार करते थे। जिस कारण बंजारा समाज को 'गोर समाज' भी कहा जाता है। हडप्पा संस्कृति के लोग भी खेती, व्यापार करते थे। इससे स्पष्ट होता है कि, बंजारा जाति यह सिंधु संस्कृति तथा हडप्पा संस्कृति के काल की रही है। सिंधु संस्कृति की बहुत सारी मान्यताएँ बंजारा संस्कृति में दिखाई देती हैं। सिंधु संस्कृति में पृथ्वी, शिंग,वृषभ, पशु पालन, लिंगपूजा को महत्व दिया जाता था। उसी प्रकार से बंजारा संस्कृति में 'सूरज' और 'अग्नि' की पूजा करते है।

इस से स्पष्ट होता है, कि बंजारा शब्द घुमंतू जाति के संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है और इस जाति की अवधारणा के लिए उस जाति के वर्गों के द्वारा किये जाने वाले कर्म, व्यापार और अन्य समाजोपयोगी कर्मों से घुमंतू जाति होले के कारण इसमें भाषा और संस्कृति में एक सामाजिकता को समाई है। यह भी इस जाति के संदर्भ में सर्व स्वीकार यह है, कि इसकी व्याप्ति सर्व देशीय है।

बंजारा समाज का इतिहास सदियों पुराना है। बंजारा समाज की संख्या महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश में सर्वाधिक है। संपूर्ण भारत में बंजारा समाज की कई उपजातियाँ है, जिनमें राजस्थान में बामणिया, लबाना, मारू भाट और गवारियाँ उपजाति है। जनसंख्या के लिहाज से बामणिया बंजारा समुदाय सबसे बड़ा माना गया है।

इतिहास से ज्ञात होता है कि बंजारा लोग पहले से ही व्यापारी वृत्ति के थे तथा राजस्थान के व्यापारी समुदाय से मिले हुए थे। राजस्थान, मालवा, गुजरात आदि प्रदेश राजपूत राजवंशों के ही थे। इन प्रदेशों में व्यापार बड़े पैमाने पर चलता था। इस प्रदेश के व्यापारी लोग देस-विदेश में माल लेकर व्यापार किया करते थे। राजस्थान के व्यापारी लोगों में गुज्जर, मारवाडी और बंजारा लोग अधिक प्रसिद्धि पा चुके थे। जीवन-यापन का एकमात्र साधन व्यापार होने के कारण इनकी आर्थिक स्थिति अच्छी रही। लेकिन अकबर और राणा प्रताप के युद्ध से इनकी आर्थिक स्थिति पर विपरीत परिणाम पड़ा। यह राणा प्रताप के अनुयायी थे। राणा प्रताप के साथ बंजारों को अनेक विपत्तियों का सामना करना पड़ा। मुगलों के आकांड-तांडव से ऊबकर तथा जीवन-यापन करने के लिए यह लोग मुगल फौजों को रसद तथा युद्ध सामग्री पहुंचाने का काम करने लगे। शाहजहाँ के नेतृत्व में दक्षिण में बिजापुर के आदिलशाह पर आक्रमण करने के लिए मुगल फौजों के साथ 1630 ई. के लगभग यह बंजारे दक्षिण की ओर पहुंच गए और कालांतर में यह वही बस गए।

"बंजारों के व्यवसाय अलग-अलग है। प्राचीन काल में बंजारे वाणिज्यकार या व्यापारी के रुप में खाद्य-पदार्थ और अन्य सामाग्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाने का कार्य सामूहिक रूप से किया करते थे। बंजारों को देश के चारों दिशाओं में दूर-दूर तक यात्रा करने के बाद अपने मूल स्थान पर लौटना संभव नहीं था। उनकेलिए शीत और ग्रीष्म दोनों ऋतुएं कष्टकारक होती हैं। बंजारा स्त्री-पुरुष अपने व्यापार के लिए बैल, बैलगाडी, ऊंट और घोड़े का प्रयोग करते थे बंजारे किसी भी काम के लिए सामूहिक रूप से जाते थे।"[9] बंजारा समुदाय हमेशा उत्पीड़न का शिकार होता रहा है चाहे सामंतशाही व्यवस्था से या अंग्रेजों ये या फिर आजादी के बाद सरकारी नीति से। पहले बंजारा समाज का मुख्य व्यवसाय नमक का था। आजादी की लड़ाई में बंजारों के योगदान को हमेशा ही कमतर आंका गया है। घुमंतू होने की वजह से यह सूचनाओं के आदान-प्रदान का बेहद विश्वसनीय जरिया थे। बाद में अंग्रेजों ने बंजारा सनुदाय को आर्थिक रूप से कमजोर करने के लिए 31 दिसंबर 1859 को 'नमक कर विधेयक' थोप दिया। बंजारा समुदाय ने इसका विरोध प्रदर्शन किया। गांधी जी के साथ 1930 में उन्होंने विरोधस्वरूप दांडी मार्च भी किया । अंग्रेजों के इस फैसले से नमक के व्यापारी बंजारों की कमर टूट गई। आखिरकार उन्हें अपना पैतृक नमक का व्यवसाय बदलना पड़ा। उसके बाद से बंजारा समाज आज तक छोटे-मोटे काम कर जीवन-यापन करते हैं। बंजारा समाज की महिला-पुरुष गोंद, सींधा नमक, मिट्टी मुल्तानी, मेहंदी,लोहे से बने औजार जैसे सामान बेचने को मजबूर हुए। कई को शहरों का रुख करना पड़ा।

वेशभूषा एवं आभूषण

प्रत्येक जाति की अपनी सांस्कृतिक व्यवस्था होती है उस सांस्कृतिक व्यवस्था के पीछे उस जाति का प्राचीन इतिहास छिपा होता है। इसलिए जाति को अन्य से पृथक पहचाना जा सकता है। बंजारा जाति की सांस्कृतिक व्यवस्था अतिप्राचीन तथा परंपरागत है। इनमें इनकी वेशभूषा पद्धति, आहार पद्धति तथा हस्तकलाओं का समावेश होता है। बंजारा समाज अपनी वेषभूषा के कारण पूरे भारत में एक अलग पहचान रखता है। बंजारा जाति की वेशभूषा राजस्थान की वेशभूषा के बहुत नजदीक पाई जाती है। आम तौर पर बंजारा पुरुष सिर पर पगड़ी बांधते हैं। कमीज या झब्बा पहनते हैं। धोती बांधते हैं। हाथ में नारमुखी कड़ा, कानों में मुरकिया व झेले पहनते हैं। अधिकतर यह हाथों में लाठी लिए रहते हैं। बंजारा समाज की महिलाएं बालों की फलियां गुंथ कर उन्हें धागों में पिरोकर चोटी से बांध देती हैं। महिलाएं गले में सुहाग का प्रतीक दोहड़ा पहनती हैं। हाथों में चूड़ा, नाक में नथ, कान में चांदी के ओगन्या, गले में खंगाला, पैरों में कड़िया, नेबरियां, लगंड, उंगुलियों में बिछिया, अंगूठे में गुछला, कमर पर करधनी या कंदौरा, हाथों में बाजूबंद, ड़ोड़िया, हाथ-पान व अंगूठियाँ पहनती हैं। कुछ महिलाएं घाघरा और लहंगा भी पहनती हैं। लुगड़ी ओढ़नी ओढ़ती हैं। बूढ़ी महिलाएं कांचली पहनती हैं। बंजारा स्त्रियों के आभूषण के संबंध में डॉ. श्रीराम शर्मा के अनुसार-"बंजारन वस्त्रों की भांति आभूषणों के मामले में भी विशेष रूचि रखती हैं। व्यवस्थित समाज की स्त्रियाँ अधिकांश आभूषणों को विशेष अवसरों पर पहनती है, किंतु बंजारन अपने अलंकरणों को देह से अलग करना नहीं चाहती। अन्य आदिम जातियों की महिलाओं की तरह बंजारा स्त्री भी कौडी, सीप, दुवन्नी चवन्नी आदि से अपने आभूषणों तैयार करा लेती है।"

बंजारों की संस्कृति राजस्थान प्रांत से होने के कारण आज भी बंजारों की वेशभूषा, रीति-रिवाज, रहन-सहन और विविध संस्कार, राजस्थानी संस्कृति से मिलते-जुलते है।

खान-पान

बंजारा का खान-पान अन्य समाज से भिन्न है। किंतु खाद्य पदार्थों में बंजारों की रूचि और राजस्थानियों की रूचि एक ही है। आज भी बंजारे अपने पूर्वजों की रूचि से दूर नहीं हैं। भारत के किसी भी कोने में वास करने वाले बंजारा लोगों का आहार लगभग एक ही प्रकार का है। बंजारे शाकाहारी और मांसाहारी भोजन लेते हैं। बंजारा व्यक्ति तेज तर्रार सालन व्यवहार में खाता दिखायी देता है। बंजारे के खान-पान दो प्रकार के होते हैं। एक है सामूहिक खान-पान तथा दूसरा है व्यक्तिगत खान-पान। सामूहिक खान-पान यह शुभ अवसर पर या धार्मिक क्रिया-कर्म के समय किया जाता है।

शाकाहारी भोजन- बंजारा जाति क्षत्रिय वंश के होने के कारण उन पर हिंदू धर्म का प्रभाव साफ देखा जा सकता है। हिंदू धर्म में जो भोज्य पदार्थ बनाए जाते हैं उसी प्रकार बंजारा जाति भी भोज्य पदार्थ बमाती है। बंजारा जाति यह मूल राजस्थान से होने के नाते इन पर राजस्थानी आहार पद्धति का भी असर पड़ा हुआ है। परंतु बंजारा जाति घुमक्कड़ होने के अलग-अलग प्रांतों में बसी हुई है। इसलिए इस जाति पर उस प्रांत के आहार पद्धति का भी प्रभाव देखने को मिलता है। रोटी बंजार जाति की प्रमुख आहार होती है। बंजारा बोली में रोटी को 'बाटी'कहा जाता है। बाटी यह ज्वार, बाजरा, मकई से बनाई जाती है। 'राबडी' भी बंजारा लोगों की सबसे पसंद

आहार माना जाता है। 'राबडी' यह व्यंजन छाछ से बनाया जाता है। बंजारा लोग इसके अतिरिक्त दलिया, खोडी पोळी, गलवाळी, लापसी, सुवाळी बाजरे की खिचड़ी, आमरा लाल मिर्च का सालन आदि बड़े चाव से खाते हैं।

मासांहारी- बंजारा मूलत: जंगलवासी है तथा इनमें शिकार करने की प्रवृत्ति पैदाइशी होने के कारण अधिकतर बंजारा लोग मांस का सेवन करते हुए दिखाई देते हैं। आज भी इनके दैनिक भोजन में हमें एक-दो बार मांस से बन खाद्य पदार्थ रहते हैं। मांसाहार के सिवा इन लोगों को भोजन अधूरा-सा लगता है। मूलत;पाहड़ों तथा जंगलों में रहने वाले और शिकार करने का शौक रखने वाले बंजारा लोग बकरी, मुर्गा, खरगोश, तीतर, जंगली सुअर, केकड़ा, कुछआ, मछलियां आदि प्रणियों का मांस सेवन करते हैं। जंगली सुअर की शिकार करके खाने में इन्हें विशेष आनंद मिलता है। सुअर का शिकार करने वाले आदमी को बंजारा बोली में 'सुरमामाटी' कहते है। बंजारा लोग अंधश्रद्धा से ग्रस्त रहने के कारण हर परिवार में किसी न किसी देवी-देवताओं के नाम पर बकरा 'बलि' देने की प्रथा भी देखाई देती है। यह लोग बकरे के मांस के लिए अधिक धन खर्च करते हैं। इनमें देवी-देवताओं के नाम पर मांस के साथ शराब का भी अत्यधिक सेवन किया जाता है।

यह जाति आज जगह-जगह शहरों एवं गाँव के पास स्थिर हो चुकी हैं, फिर भी ये लोग रूढ़ि परंपराओं को त्यागने के लिए तैयार नहीं है। इसलिए बंजारा जाति आज तक पिछड़ी हुई स्थिति में जीवन-यापन कर रही है।

रीति-रिवाज- बंजारों के सामाजिक रीति-रिवाज अन्य जातियों द्वारा मनाए जाने वाले धार्मिक, सामाजिक रीति-रिवाज, उत्सवों तथा समारोहों से भिन्न होते हैं। इनके सभी रीति-रिवाज परंपरागत एवं सदियों पुराने है और यह आज भी उनका पालन करते चले आ रहे हैं। इनमें जनन संस्कार, नामकरण संस्कार, विवाह संस्कार, तथा मृत्यु संस्कार आदि चार प्रमुख संस्कार मात्र मनाएं जाते हैं। इसके अलावा तीज, दीपावली, दशहरा, और होली आदि त्यौहारों को सभी बंजारे मिलजुलकर बड़े ही धूमधाम से मनाते हैं।

बंजारा धर्म पिपासु हैं। इनके धार्मिक विश्वास परंपरागत हिन्दू धार्मिक विश्वासों से संबंधित हैं। धर्म, पूजा, व्रत, त्यौहार, धार्मिक संस्कारों आदि पर प्रभाव दर्शानीय है। धार्मिक तौर पर इस समुदाय ने अब तक किसी एक धर्म को सम्पूर्ण विधि-विधानपूर्वक लहीं अपनाया है और मनमाने तरीके से अनेक देवी-देवताओं को मानते हैं और मनमाने तरीके से पूजा भी करते हैं। हिंदू होते हुए भी इन्होंने हिंदू धर्म की किसी एक शाखा को नहीं अपनाया है। बंजारा समुदाय में प्रकृति एवं अज्ञात के प्रति भय, विस्मय की आदिम भावना भी व्याप्त है, जिसका बाह्य रूप मंत्र-तंत्र, जादू-टोना आदि के रूप में दिखाई देता है। इनमें अग्नि के साथ जल, जंगल भूमि तथा नई फसल आदि की भी पूजा की जाती है। बंजारा सभी देवी-देवताओं को मानते हैं जैसे- सेवालाल, हूंभूक्या, मिटूथूक्या, राम, कृष्ण, बालाजी, तुळजाभवानी, दुर्गादेवी, शीतलादेवी आदि इनके देवी-देवता हैं। छत्तीसगढ़ के बंजारे 'बंजारा' देवी की पूजा करते हैं, जो इस जाति की मातृशक्ति की द्योतक हैं।

बंजारा समुदाय में अनिष्टकारी शक्तियों के प्रति भय का भाव भी दिखाई देता है। मृतात्माओं को संतुष्ट रखने का प्रथाएँ भी प्रचलित हैं। सांसारिक बाधाओं, रोगों से मुक्ति पाने के लिए तथा भूत-प्रतों से बचने के लिए मंत्र-तंत्र, जादू-टोना आजि का सहारा भी लिया जाता है. अपने देवी देवताओं को संतुष्ट करने के लिए बकरा 'बलि' देने की प्रथा भी इनमें प्रचलित है।

नृत्य और लोकगीत

भारत में हमें अनेक जाति के लोगों में परंपराएँ ,लोककलाएँ देखने को मिलती हैं। हम देखते है कि मानव जीवन और कला का गहरा संबंध है। मनुष्य अपने नित्य कामों से ऊब जाने पर थकान मिटाने के लिए या अपने गम़ों को भुलाने के लिए संगीत का सहारा लेता है। संगीत से तरोताजा होकर फिर से अपने कामों में जुट जाता है। प्रत्येक समुदाय की अपनी परंपरागत वाद्य-सामग्री है जो नृत्य व लोकगीत तथा होली, दीपावली, दशहरा आदि धार्मिक देवी-देवताओं के उत्सव के अवसरों पर गाए जाते हैं। बंजारा समाज नृत्य, संगीत, रंगोली, कशीदाकारी, गोदना और चित्रकारी के लिए बेहद प्रसिद्ध माने जाते हैं। प्रत्येक बंजारा समुदाय की गानेवालों की एक टोली होती है, जिसे बंजारा बोली में 'गवण्या' या 'ग्वाल' के नाम से पुकारा जाता है। इनकी गानेवालों की टोली में कम से कम चार या पांच लोग होते हैं। सभी मिलकर नृत्य करते हैं। आंगिक चेष्टाओं द्वारा हृदयगत भावनाओं की अभिव्यक्ति करना नृत्य है। आंगिक चेष्टा मात्र से ही भाव को व्यक्त करने की क्रिया अर्थात् नृत्य जनसामान्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति का सूचक है। नृत्य का मूल मानव के आनंद भाव में है। और साथ-ही-साथ नृत्य स्वांत: सुखाय होने के कारण लोकनृत्यों में किसी देश या जाति की संस्कृति निहित रहती है। ठीक इसी तरह विवाह, त्यौहार आदि के संदर्भ में बंजारा स्त्रियाँ नाच-गान करती है। होली में तो सभी बंजारे सभी द्वेष-भाव भुलाकर एक जगह आकर होली का आनंद लेते हैं। होली त्यौहार में लेंगी गीत गाते है। जैसे-

"होळी आई रे भाई भाईर।
आवोरे काका दादा
आपळ रमा होळी,
भाई भाई रं,
होली रमा र,"[10]

दीवाली त्यौहार यह हिंदू धर्म का महत्वपूर्ण त्यौहार है। उसी प्रकार बंजारों का महत्वपूर्ण त्यौहार होली है। बंजारे होली और दीवाली को सगी बहने मानते है। बंजारा जनजाति की दीवाली दो दिन की होती है। इस त्यौहार में गोधन की पूजा की जाति है तथा कुंआरी लड़कियाँ सभी लोगों को, पशुओं को आशीर्वाद देती हैं। बंजारे दीवाली को काली आमावस या दवाळी कहते हैं। दीवाली के दिन बंजारे बकरे की बलि देते हैं। दीवाली और होली के संबंध में यह लोकगीत-

"होळी-दवाळी दोई भेनेडी
होळी तो मांग छळहाक बोकडो
दवाळी तो मांग झगमग दिवळो
होळी आती तो, गेरियान बेटा दे जाती
दवाळी आती तो बळदान सक दे जाती"[11]

लोक साहित्य में बंजारा लोकगीतों की परंपरा प्राचीन काल से ही देखने को मिलती है। आदिमानव की समय में भी लोकगीतों का प्रचलन रहने की संभावना व्यक्त की गई है। मानव ने जब से भाषा बोलना सीखी तब से लोकगीतों का प्रचलन हुआ है। लोकगीतों की शब्द संपदा भाषा के साथ अस्तित्व में कायम है। इसलिए बंजारा लोकगीतों का प्रवाह पीढ़ी-पीढ़ी से आज तक चला रहा है। लोकगीत अपनी सहजता, सरलता और अनुभूति की तीव्रता से लोकमानस के हृदय की धड़कनों में राग-संगीत भर देता है। उसका रोम-रोम झंकृत हो उठता है। यह लोकगीत सामाजिक आदान-प्रदान की जीवट यहाँ मशाल की तरह रोशन करते हैं। इन गीतों को धरती के गीत कहा सकता है। इसलिए यह लोकगीत हमारे जीवन के प्रत्येक कर्म के साथ जुड़े हुए हैंजांता के गीत 'जंतसार' धान रोपने के गीत, विवाह के गीत, छठी के गीत सावन के गीत, होली के गीत, दिवाली के गीत, विभिन्न देवी-देवताओं के गीत आदि गीत बंजारों को अपने पूर्वजों से विरासत में मिले हैं। लोकगीतों में केवल खुशी और उत्सव ही नहीं, बल्कि बंजारा समाज में व्याप्त विसंगतियों पर भी अनेक लोकगीत मिलते है।

उपसंहार

संपूर्ण भारत में भिन्न-भिन्न समाज जाति धर्म के लोग निवास करते हैं, जिनमें से एक

बंजारा समाज है, जिसका इतिहास सदियों पुराना है। भारत में वर्तमान में बंजारा जाति की जनसंख्या लगभग 6 करोड़ के आस-पास है। यह उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर, बिजनौर, पीलीभीत, बरेली, अलीगढ़, मुज़फ्फरनगर, इटावा, मुरादाबाद, मुथरा, एटा, आगरा, और मध्य प्रदेश के जबलपुर, छिंदवाड़ा, मंडला तथा गुजरात के पंचमहल, खेड़ा, अहमदाबाद व साराबरकांठा क्षेत्रों में बंजारे काफी संख्या में देखने को मिलते हैं। महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, तथा राजस्थान, आदि लगभग सभी प्रांतों में पाई जाती है। पूरे देश में अपनी एक अलग संस्कृति में जीने वाले इस समाज को अपनी विशिष्ट पहचान के रूप में जाना जाता है। वैसे भारतीय संविधान अनुसार बंजारा समाज के विकास के लिए प्रत्येक प्रांतों में अलग- अलग कानून बनाये गए हैं, जिसके कारण बंजारा जाति को किसी प्रांत ने उसे अनुसूचित जनजाति में, तो किसी में उसे पिछड़ा वर्ग या विमुक्त जाति की सूची में रखा गया है। देश में बंजारा समाज के लिए एक जैसा कानून नहीं होने के कारण यह समाज आज भी विकास की मुख्य धारा से नहीं जुड़ पाया है। इसके कारण बंजारा जाति के लोग अनेक प्रांतों अपनी रोज-रोटी के लिए खानाबदोश बनकर अपना जीवन यापन कर रहे हैं। राजनैतिक दृष्टि से यह समाज अपनी पहचान तक नहीं बना पाया है। वर्तमान समय में भी 6 करोड़ के आस-पास आबादी होने पर भी, किसी भी प्रांत, जिला व ब्लॉक स्तर पर इस समाज का प्रतिनिधित्व नहीं होने के कारण बंजारा समाज आज भी विकास की राह देख रहा है। अब बंजारा समाज को उनके अधिकारों से उनको वंचित नहीं रखा जा सकता, क्योंकि बंजारा समाज में नव चेतना आ रही है। वह अब संगठित हो रहा है। अब वह समय आ गया है कि बंजारा जाति को सरकारी व गैर सरकारी, राजनैतिक संगठनों में उनकों प्रतिनिधित्व देना ही पड़ेगा। जिससे सदियों से पिछड़े बंजारा समाज का रास्ता प्रबल हो। समय होते हुए यदि शासन स्तर पर समाज की ओर से ठोस पहल नहीं की जाती है। बंजारा समाज अब अपने अधिकारों के लिए और अधिक समय तक इंतजार नहीं करेगा।

संदर्भ

1. जनपद, डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, वर्ष 1, अंक 1, पृ.65
2. लोक और लोक का स्वर, विद्यानिवास मिश्र, पृ.19
3. https:// geetmanjusha.com/lyrics/1261
4. बंजारा जाति, समाज और संस्कृति, डॉ. यशवंत जाधव, पृ.2
5. वही पृ.2
6. बंजारा लोकसंस्कृति डॉ. के.के. जाधव पृ.16
7. वही पृ.16
8. वही पृ.17
9. बंजारा जाति, समाज और संस्कृति, डॉ. यशवंत जाधव, पृ.63
10. बंजारा लोकसंस्कृति डॉ. के.के. जाधव पृ.68
11. बंजारा लोकसंस्कृति डॉ. के.के. जाधव पृ.77